कर लें...मुत्यु का मैनेजमेंट...

हरेक मानव की मृत्यु निश्चित है और उनके सामने मृत्यु के बाद भविष्य महाप्रश्नार्थ रूप में है। मृत्यु के बाद कैसी गति प्राप्त होगी, ऐसा विचार करने के पूर्व महत्व की बात ये है कि अपनी मृत्यु के लिए अपना ही मैनेजमेंट करें।

मरना भी जीवन का एक भाग है। इसलिए अन्य घटनाओं की तरह हम मरन का भी आयोजन कर सकते हैं। हम जैसे चाहते हैं, वैसी मृत्यु हमें मिल सकती है। विश्व में साठ प्रतिशत लोग मृत्यु से नहीं, लेकिन मृत्यु के भय से मरते हैं। मृत्यु के भय से मुक्त बनकर मृत्यु का विचार करने से हमें इच्छित मृत्यु मिल सकती है।

मैं किस तरह मरना चाहता हूँ, होश में या बेहोश में? मैं कहाँ मरूंगा? घर में या हॉस्पिटल या किसी तीर्थस्थल पर? मेरे मनपसंद तीर्थ स्थल पर मृत्यु के समय मेरे साथ कौन कौन होगा? मरते वक्त मेरे विचार कैसे होंगे? मन में कैसी भावनायें रहेंगी? मैं विरह में मरूंगा या अविरह में? उहापोह की स्थिति में मरूंगा या ऐसे ही मर जाऊंगा? मरने के समय किस देवी देवता का दर्शन करने के इच्छा करूंगा? कौन सा मंत्र सुनने की इच्छा रखूंगा? मेरी आँखों के सामने क्या होगा? मरते वक्त मैं कौन सी शरणागति स्वीकारूंगा? मरते वक्त दूसरा कोई विचार न आ जाये उसके लिए क्या करूंगा? ये सब विचार करके रखें और ऐसी भावना करने से अपनी मृत्यु जैसी चाहिए, वैसी मिल सकती है। और हाँ, उसके लिए तैयारी तो आज से ही शुरू कर देनी चाहिए।

- ब्र.कु. गंगाधर

मृत्यु के समय कैसी अवस्था होनी चाहिए, इस भावना को अभिव्यक्त करते हुए तिलक विजयजी का एक पद याद आता है:

ऐसी दशा हो भगवन! जब प्राण तन से निकले,
गिरीराज की हो छाया, मन में न होये माया।
तब से हो शुद्ध काया...जब...
मेरी मृत्यु गिरीराज की छाया में हो।

अंत समय हॉस्पिटल में रहना नहीं है। वहाँ शरीर की देखरेख तो अच्छी हो सकती है, लेकिन आत्मा की देखरेख करने वाला कोई नहीं मिलता। इसलिए किसी भी संजोग में हॉस्पिटल में मुझे नहीं मरना है।

घर में, घर की, स्वजनों के प्रति मोह सता सकता है। अंत समय स्वजन रोते हों, तो हमारी समाधि में विक्षेप पड़ेगा। मन किसी वस्तु में, व्यक्ति पर या पैसे में अटक गया, ऐसा हो सकता है। घर में राग द्वेष पनपने की संभावना ज़्यादा है, इसलिए घर के बदले तीर्थस्थल पर मरना पसंद करेंगे। तीर्थ स्थल यानि ऐसा स्थल, जहाँ प्रभु का स्पर्श प्राप्त हुआ हो या प्रभु के प्रतिनिधि के समान पवित्र महान तपस्वी की सुहास हो। ऐसे स्थल पर मृत्यु आये, तो समाधि बनाये रखना आसान होता है। क्योंकि यहाँ आत्मा के बारे में विचार ज़्यादा होता है, परलोक का विचार भी अच्छी तरह से होता है। जिसके कारण मन समाधि में अच्छी तरह से लीन हो सकता है।

मरने के समय खाने की इच्छा बिल्कुल क्षीण हो जाती है। लेकिन साधारण मनुष्य इस अवस्था में भूख सहन नहीं कर सकता। उसकी मरते वक्त तो खाने की इच्छा और तीव्र हो जाती है। लेकिन शरीर के द्वारा खुराक ले नहीं सकता। जिसके कारण उनकी पीड़ा ज़्यादा उग्र बन जाती है। प्यास भी ज़्यादा लगती है। ऐसी पीड़ा में जो मन खाने पीने की वस्तु पर अटक जाता है, तो दुर्गति होने की संभावना बढ़ जाती है। अंतिम समय में शरीर को जो खुराक देते हैं तो उससे शक्ति मिलने के बदले विकृति पैदा हो जाती है। खुराक जैसे कि ज़हर में तब्दील हो जाता है। शरीर पर नियंत्रण नहीं रहता। अंदर और बाहर से शरीर अपवित्र बन जाता है। ऐसी दशा में मन को समाधि में रखना दुष्कर है। इसलिए अंत समय खाने की इच्छा ही न जगे, उसके लिए आहार त्याग कर शरीर के अंदर और बाहर की शुद्धि बनी रहे, ऐसा हम चाहते हैं।

मन में ना मान होवे, दिल में एकता होवे
तुम शरण ध्यान होवे... जब प्राण...

मरते समय मन में शुद्ध विचार और शुभ भाव रहे, ये बहुत ज़रूरी है। शारीरिक पीड़ा में मन तुरंत ही अंतर्ध्यान से फिसल जाता है। ऐसे समय मन में अंतर्ध्यान बना रहे, इसके लिए सर्वशक्तिमान परमात्मा के साथ मज़बूत रिश्ते का सहारा चाहिए। अंत समय ऐसे विचार आने बहुत मुश्किल रहते हैं। शरीर में अत्यंत पीड़ा होती है, मन में मृत्यु का डर होता है, इस कारण मन चंचल हो जाता है और अशुभ भावों में फिसलता है। मन में शुभ भाव भगवान के सुमधुर स्मरण से ही जन्मते हैं। लेकिन अंत समय भगवान याद आवे, ये सहज नहीं रहता। क्योंकि जब तक मन में मान है, तब तक प्रभु मन में प्रवेश नहीं होता। इसलिए मृत्यु के समय 'मैं और मेरा पन' मान से मुक्त हो जायें और एकाग्र होकर ईश्वर का ध्यान कर सकें, ऐसी स्वस्थता होनी चाहिए। हमने अपने मन में अनेक अशुभ भावनाओं का संग्रह करके रखा है। हमने अपना सारा जीवन अशुभ भावों को इकट्ठा करने में और उसको सम्भालने में बिताया है। ये सब अशुभ भावनायें मृत्यु के समय बाधक बनती हैं, अवरोध पैदा करती हैं। ऐसे भाव सद्गति के मार्ग में पत्थर की तरह अड़चन पैदा करते हैं।

'जाते और आते मेरे ही रस्ते पर बनकर पत्थर मैं खुद ही अड़चन बना।'

मृत्यु के समय ये अशुभ भाव हमारी सद्गति में रुकावट ना पैदा करें, ऐसा ध्यान हमें रखना चाहिए।

अभिमान सर्व दोषों को मज़बूत बनाता है। अभिमान हरेक दोषों को बचाव करना सिखाता है। इस तरह दोषों को पनपाता है। दोष मनुष्य को अस्थिर करते हैं और अस्थिर मन में समाधि टिक नहीं सकती। इसलिए मृत्यु के समय समाधि बनाये रखने के लिए मन को अभी से ही अभिमान मुक्त करने की आदत डालनी चाहिए।

परमात्मा की महानता का विचार करने पर तथा आजीवन उसे याद करने की आदत को परिपक्व बनाने से अभिमान निर्बल बनता है। सर्व प्राणिमात्र के प्रति वात्सल्य भाव, अभिमान के पहाड़ को पिघला देता है। इसलिए राम के भाव को बढ़ाइये, तो समाधि का मार्ग सुलभ बनेगा। परिणामस्वरूप अंत समय सर्व दुःखों को भूल जायेंगे।

तो मृत्यु का मैनेजमेंट करना तथा कैसे करना, ये अभी से ही हमें सीख लेना चाहिए। क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है, लेकिन कैसी मृत्यु हो, उसके तैयारी आज से ही करनी होगी।

स्वयं को अकेला समझो, पर किसी को ठुकराओ नहीं

बाबा की समर्पण लाइफ को देख पहले-पहले शुरू में बाबा को फॉलो करने के लिए जो भी निमित्त बने, समर्पण हुए, वो बाबा के रत्न बन गये। हर एक की स्टोरी वन्डरफुल है, पर हम भी पदमापदम भाग्यवान हैं जहाँ कदम रखा है कमाई है, क्योंकि पढ़ाई से बहुत प्यार है। लौकिक माँ बाप को खुशी होती है बच्चा अगर अच्छा पढ़ा लिखा है तो। बाबा को भी अच्छा लगता है जो बच्चा पढ़ाई में ध्यान देता है।

ज्ञान की मंज़िल कहती है - अकेला हूँ, अकेला जाना है। अकेला समझो तो कभी भी देह तरफ आकर्षण नहीं जा सकती। हम बाबा की गोदी में चले गये, न मैं किसी की गोदी में हूँ, न कोई मेरी गोदी में आ सकता। यह ईश्वरीय लॉ कहता है। हमें तो देह के धर्मों से भी परे जाना है। बुद्धि में एक बाबा है तो सब विकारी वृत्तियां समाप्त हो जाती हैं। ज्ञान की ढ़ाल को साथ रखो।

आपस में कभी भी खिट-पिट नहीं होनी चाहिए। जब अपने को मालिक समझते तो आँख दिखाते। बाबा ने कहा तुम्हे प्रवृत्ति में प्रेम और शान्ति से रहना है। एक मत हो रहना है। हरेक की बुद्धि अपनी है, हिसाब-किताब अपना है। परंतु लक्ष्य रखने से लक्षण आ ही जाते हैं। श्रीमत को जज बनाओ। श्रीमत कहती है - एकमत रहना ही है। इसमें कभी-कभी दूसरे की बात को रखना पड़ता... ऐसे नहीं समझो बाबा ने कहा है तुम अकेले हो, तुम्हें श्रीमत को ही मानना है। साथी की बात को ठुकरा दो, ऐसा भी एडवान्टेज नहीं लेना है। हरेक को अपना अपना एक्यूरेट खेल खेलना है। केयरफुल रहो तो चियरफुल बन जायेंगे। अगर केयरफुल नहीं रहते तो खिट खिट होती है, इसलिए होश भी रखना होता और फिर उमंग, जोश भी रखना होता। बाबा कहते दोनों का बैलेन्स बनाकर चलो। कभी भी थोड़ी-थोड़ी बातों में अपना मूड ऑफ मत करो। ऑफ माना ऑफ।

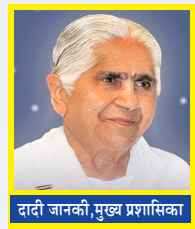
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

अगर थोड़ी घड़ी के लिए किसी ने कुछ रॉन्ग भी बोला, आपने उसे समझा दिया यह रॉन्ग है, परन्तु वह नहीं मानता तो उसके कारण तुम अपनी स्थिति खराब क्यों करते! तुम डिस्टर्ब क्यों होते! क्या उस टाइम में आपकी योगयुक्त स्थिति कही जायेगी? फिर दूसरे के पीछे तुम अपना चार्ट क्यों खराब करते? राइट, रॉन्ग की राय देना आपका कर्त्तव्य है। बाकी हरेक को चलना तो अपने पांव से है। अपना चार्ट खराब नहीं करो। स्व स्थिति से ही सेवा कर सकेंगे। स्व का चार्ट ठीक रखो। स्व आत्मा को शीतल बनाओ, सर्व शक्तियों को साथ रखो। जब टाइम समाने का हो तो उसे समा लो, जब राइट रॉन्ग से सामना करना हो तो सामना करो। समय पर सहन करने की बात हो तो सहन कर लो। ऐसे नहीं मैं क्या करूं! मेरे में तो सहन करने की शक्ति नहीं है। जब नहीं कहा तो नहीं माना योग नहीं। अगर योगयुक्त रहना है तो हर शक्ति को हमेशा अपने साथ रखो। सारा दिन पेपर तो हरेक के सामने आते हैं। जैसे सौभाग्य हमारा बनता वैसे माया उसे तोड़ने के सौ प्रयास करती है। परन्तु अपनी स्व स्थिति में, स्वमान में रहो तो उसके लिए हैरान नहीं होना पड़ेगा।

अब मेहनत मुक्त सहज पुरुषार्थी बनो

आत्मा के निजी संस्कार क्या हैं? ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शांत स्वरूप, पवित्र स्वरूप...यही हैं। और बॉडी कॉन्सेस के संस्कार किसके जोश के हैं, किसके बहुत टू मच रमणीकता के हैं...यह सब जो भी संस्कार हैं यह बॉडी कॉन्सेस के हैं। बाकी वास्तव में आत्मा के संस्कार तो वह हैं।

इस समय आप सब देखते अनुभव करते हो कि अव्यक्त बाबा को जो काम जिससे कराना होता है, जब कराना होता है, तब ऐसी आत्माओं में ऐसी भावनायें भर देता है, शक्तियां भर देता है। सिर्फ इसमें हमको निमित्त बनना है। बाकी कमाल तो बाबा की ही है, व्यक्त में तो कमाल दिखाई स्थापना की। लेकिन अव्यक्त में भी बाबा कमाल कर रहा है जो सबको सम्पूर्ण बनाकर साथ ले ही जायेगा। तो क्यों नहीं हम प्यार से तैयार हो जायें, सज़ायें खाकर क्यों जायें! पुरुषार्थ भी बहुत सहज है, क्योंकि इस समय हमको दो बाप हैं। एक शिवबाबा समान विदेही बनना है, न्यारा बनना है, आत्मा बनना है। और कर्म में ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना है। कोई भी काम शुरू करने से पहले ब्रह्मा बाबा को सामने लाओ। ब्रह्मा बाबा ने कैसे किया? बाबा की वृत्ति क्या? बाबा की दृष्टि क्या? बाबा कैसे कर्म करता है? यह सब मुरलियों में स्पष्ट बताता है। तो ब्रह्मा बाबा को सामने रखो, उनको फॉलो करो। जैसे बाबा ने किया है, मुझे भी वैसा ही करना है। नई कोई मत नहीं चलानी है, नया कोई काम नहीं करना है। बस। सिर्फ फॉलो ही करना है। कदम पर कदम रखना है और कोई रास्ता नहीं ढूंढ़ना है, यह तो बहुत ईज़ी है। बाबा मंज़िल पर पहुंच गया, अव्यक्त हो गया माना रास्ता राइट है तभी तो मंज़िल पर पहुंचा। तो हम भी पहुंचेंगे ज़रूर लेकिन फॉलो फादर करेंगे तब। उनके कदम पर कदम उठा रहे हैं तो ज़रूर पहुंचेंगे, सहज पुरुषार्थ है। बाकी इतना बैठकर मेहनत करना, माया क्यों आयी... ऐसे सोचना, यह भी उसको और ही चाय पानी पिलाना है। और जिसको चाय पानी पिलायेंगे वह बैठेगी या जायेगी? फिर मेहनत करो, योद्धे बनो इसलिए उसको बिठाओ ही नहीं, तो मायाजीत सहज हो जायेंगे। अब सहज पुरुषार्थ में रहो, संस्कार में भी ईज़ी रहो। संस्कार और पुरुषार्थ में ईज़ी माना हँसी-मज़ाक वाला नहीं। ईज़ी माना जैसा समय वैसा हम अपने को मोल्ड कर सकें, इसको कहते हैं ईज़ी नेचर। ईज़ी नेचर माना हर परिस्थिति में एडजस्ट करने की ताकत होनी चाहिए और जैसा समय उसी अनुसार अपने को मोल्ड कर दें। एडजस्ट करके अपने को न्यारा करके चलो। उस बात को पकड़ कर रुको नहीं, यह क्यों हुआ? यह क्या हुआ? ऐसा होना थोड़ेही चाहिए! यह मर्यादा नहीं है! यह बड़े क्यों करते हैं, छोटे क्यों करते हैं, अरे आप उसके ज़िम्मेवार हो क्या? अगर कोई बात है तो ऊपर दे दिया बस, खत्म। बाकी सोच नहीं चलाओ। नहीं तो ऐसी व्यर्थ संकल्पों की आदत पड़ जायेगी जो उससे छूटना बहुत मुश्किल हो जायेगा। फिर टाइम वेस्ट, एनर्जी वेस्ट, सब वेस्ट, इसलिए अभी समय को बचाओ, संकल्पों को बचाओ और शक्तियों तथा गुणों को बचाओ, जमा करो। अमृतवेले एकदम ऐसे फुर्त होकर बैठो तो दो चार दिन में भी आपको इतने अच्छे अनुभव होंगे जो ट्रान्स तो उसके आगे कुछ भी नहीं है, क्योंकि हमको तो दोनों अनुभव हैं। ट्रान्स टेम्प्रारी टाइम का होता है और अनुभव सदाकाल का होता है। उस अनुभव को कभी भी याद करेंगे तो उसमें ही खो जायेंगे। ट्रान्स का संकल्प नहीं करो क्योंकि संकल्प करने वाला तो ट्रान्स में जा ही नहीं सकता है, नीचे आ जायेगा क्योंकि इस संकल्प का भी बोझ तो है। इसमें तो न्यारा होना पड़ता है।

दादी हृदयमोहिनी,
अति. मुख्य प्रशासिका

श्रीमत का लॉक लगाने वाला ही लक्की

हम सभी प्यारे बाबा का हर मानव मात्र को शुभ संदेश, शुभ पैगाम पहुंचाने वाले पैगम्बर अथवा संदेशी हैं। पैगम्बर कौन होता है? इस वैरायटी झाड़ में देखेंगे तो जो भी अपना अपना धर्म स्थापन करके पैगम्बर बने हैं, वह आत्मायें अपने अपने समय पर अपने प्यारे बाप के घर से डायरेक्ट आने के कारण सतोगुणी हैं फिर चक्र में आते हैं लेकिन हम पैगम्बर उन सबसे निराले हैं। वे बाप के घर से मर्ज हुई आत्मायें आती हैं और हमें बाप सम्मुख में नॉलेज देकर पावन बना रहे हैं। बाप ने हमें सिर्फ नॉलेज नहीं दी बल्कि अपना बनाकर अधिकारी बनाया है, वर्सा दिया है। उन पैगम्बरों को तो कहा, आप अपना अपना पिल्लर खड़ा करो और हमें पैगम्बर बनाया कि तुम्हें सारे विश्व का नव निर्माण करना है। पुराने को खत्म कर नया करना है। सारी विश्व की आत्माओं को मुझ बाप का पैगाम देना है।

बाबा ने हम बच्चों को इस बेहद झाड़ की जड़ में राजयोगी बनाकर बिठाया है - नव निर्माण के लिए। याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। बाबा ने हमें सारे नव निर्माण की नींव पर रखा है। जब कोई मकान बनाते तो उसका पहला आधार नींव पर रहता है। जितना फाउण्डेशन पक्का होगा उतना इमारत का प्लैन रखेंगे। वह पैगम्बर कोई मकान के फाउण्डेशन नहीं, वह तो मरम्मत करने वाले हैं। लेकिन हमें तो नई दुनिया के नव निर्माण के लिए फाउण्डेशन में बाबा ने अन्दर रखा है। हमारा बाबा है फाउण्डर, उसने हमें फाउण्डेशन में रखा और कहा इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मज़बूत करो।

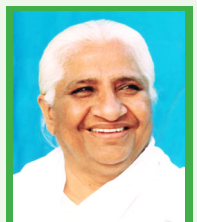
दादी प्रकाशमणि,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

एक तरफ हम नींव हैं दूसरे तरफ हमें बाबा का पैगाम देना है कि बाप आया है - नव निर्माण करने। हमें बाबा ने सन्देशी बनाया है कि चारो तरफ मेरा सन्देश दो। एक तरफ हम राजयोगी, पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, हमारा योग ही सहयोग है। यही हम बाप को नव निर्माण के लिए सहयोग देते हैं। हम नव निर्माण के आधार हैं। हमारे आधार पर ही सृष्टि का उद्धार होना है। दूसरा हम पैगम्बर हैं।

हम पैगम्बर आते हैं अपना धर्म स्थापन करने और हम कल्प के आदि में आये अभी फिर जा रहे हैं। अभी हम ऐसी नींव डाल रहे हैं जो 21 जन्म तक हमारा मकान सदा सजा सजाया रहेगा। तो हरेक ऐसी अपनी जवाबदारी समझते हो कि हम इस जड़ में बैठे हैं। अपनी कूट कूट कर नींव पक्की कर रहे हैं? हमारा फाउण्डेशन है बुद्धियोग, नींव है याद की यात्रा। अगर हम नींव डालने वालों की बुद्धि भटकती है तो मकान का क्या होगा! अगर नींव डालने वाले, नींव डालते डालते इधर उधर चले जायें, उस नींव का क्या होगा! हम सभी नींव में हैं, कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। हमें तो सर्विस की बहुत धुन है। लेकिन बुद्धि को बाहर भटकाते, तो वह नींव हिलेगी या मज़बूत होगी? अगर नींव में बैठे बैठे निकल जाते तो उसके लिए बाबा कहता - तुम्हें 100 गुणा दण्ड मिलेगा। अगर आज कोई कॉन्ट्रेक्टर लिखा पढ़ी करके कॉन्ट्रेक्ट ले और पीछे धोखा दे तो उस पर केस चल जाता। आपने भी बाबा के लेज़र में नाम लिखाया, फार्म भरा अब कहो मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि फार्म भरा माना फंस गये। सोच कर फंसे ना! अच्छाई के लिए फंसे ना! बाप के प्यार में फंस गये। ठेका ले लिया ना! अब निकलेंगे भी तो कहाँ जायेंगे। हट्टी तो एक ही है। भागे तो भागे कहाँ। कोई रास्ता नहीं, लॉक लग गया है। जिसको लॉक लगा वही लक्की है, हम बाबा की लॉक के अन्दर हैं माना श्रीमत के अन्दर हैं, हमारा लॉक है श्रीमत।